स्वराली

अण्डे से पक्षी तक का सफर

एक बार मेरे घर के बगीचे में एक चिड़िया ने घोंसला बनाया। चिड़िया का नाम सन बर्ड था। उसने अपना घोंसला हमारे बगीचे में लगी लक्ष्मण बेल पर बनाया था। यह घोंसला उसने दो-तीन दिन के अन्दर बना डाला। फिर एक दिन मैंने देखा कि उसने चार अण्डे दिए हैं। वह रोज़ उन्हें सेकती। 5-6 दिन बाद मैंने देखा कि घोंसले में दो बच्चे हैं। वे बहुत प्यारे थे। मैं रोज़ देखा करती। उनकी न तो आँखें खुली थीं न ही उनके शरीर पर बाल थे। उनकी माँ उन्हें बिलकुल भी अकेला नहीं छोड़ती थी। बस एक-दो बार वो उनके लिए खाना ढूँढने जाती थी। तीन दिन तक उसने अपने बच्चों को कीड़े (गिंडोले) खिलाए। पहले वह उन्हें खुद चबाती फिर उनके मुँह में डाल देती। चौथे दिन वे खूब चिल्ला रहे थे पर उनकी आवाज़ नहीं निकल रही थी। बस वे अपना मुँह फाड़ते रहते। उसी दिन दोपहर को एक कौए ने एक बच्चा उठा लिया। मुझे बुरा लगा।

लेकिन फिर भी उस दूसरे बच्चे के साथ मुझे खूब मज़ा आया। वह धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। हमने उसका नाम चिलिया रखा। पहले उसके पंख आए और उसकी आवाज़ भी आने लगी। वह रोज़ सुबह-शाम बस चिल्लाता रहता। मैं उसके साथ मस्ती करती। उसे फूँक मारती तो वो ज़ोर से चिल्लाता और आँख बन्द कर लेता। जब कभी मैं उसकी छोटी-सी चोंच को पकड़ती और उसके सिर को छूती तो वो फिर चिल्लाता। कभी-कभी मैं उसे छोटा-छोटा करके रोटी भी खिलाती। पर वो बाहर निकाल देता। जब उसकी माँ आती और रोटी पड़ी हुई देखती तो उसे उठा-उठाकर फेंक आती। घोंसले को वह हमेशा साफ रखती। यहाँ तक कि उस बच्चे की बीट को भी बाहर फेंक आया करती।

लेकिन पाँचवे दिन तो मैं बच्चे को देखकर चौंक ही गई! वो अपने घोंसले से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे वापस अन्दर बिठा दिया लेकिन वो बार-बार कोशिश करता रहा। फिर तीसरी-चौथी बार में वो बाहर आ गया। वह बाहर आकर धीरे-धीरे बेल पर चढ़ने लगा। फिर पौधे पर बैठने की कोशिश में एकदम से नीचे गिरने लगा। लेकिन फिर तुरन्त ही नीचे वाले पौधे पर सम्भलकर बैठ गया। पूरे दिन वह ऐसे ही करता रहा। मैंने उसे अपने हाथ में लिया और उसके साथ खूब खेली। मैं उसे घर ले आई और खूब मस्ती की। फिर वापस घोंसले में छोड़ दिया ताकि उसकी माँ उसे कुछ खिला सके।

अगले दिन उसने फिर उड़ने की कोशिश की और थोड़ा-थोड़ा फुदककर उड़ने लगा। मैं उसे पौधों पर बिठाती और कभी अपनी उँगली पर लेकर अपना हाथ झटकती तो वो उड़के किसी पौधे या ज़मीन पर बैठ जाता। मैं उसे वापस घोंसले में छोड़कर चली जाती। जब वापस आती तो वो दिखता ही नहीं! क्योंकि अब तक वह काफी हद तक उड़ने लगा था। इस तरह वह पूरे दिन उड़ता ही रहता। कभी इस पौधे पर तो कभी उस पौधे पर। सातवें दिन वह कहीं भी दिखाई नहीं दिया। बाद में एक दिन सुबह दस बजे के करीब वह मुझे एक पेड़ पर बैठा मिला। वह पेड़ हमारे घर के सामने एक बगीचे में लगा था। वह एकदम ऊपर की ओर बैठा मिला। मैं दौड़कर अपनी छत पर गई और उसे उठाकर ले आई। फिर मैं उसके साथ खूब खेली। फिर वापस छोड़ दिया। इसके बाद वह बस दो दिन तक दिखा, फिर पता नहीं कहाँ चला गया। पर मैं उसे कभी नहीं भूल सकती क्योंकि उसके कई फोटो भी मैंने लिए, खासकर जब वह बाहर निकलने लगा था। कुछ फोटो उसकी माँ के साथ भी मैंने खींचे और कुछ, जब वह अपने घोंसले में बैठा रहता था। मुझे उसकी बहुत याद आई और दूसरे बच्चे की भी, जो अब नहीं रहा था। लेकिन, आखिर के दो दिनों में मैंने देखा कि जिन दो अण्डों में से बच्चे नहीं निकले थे, वो भी गायब हो गए थे।

इस बात को हुए तीन महीने बीत गए हैं। अब फिर से एक चिड़िया रोज़ वहाँ पर आती है और घोंसले के लिए जगह ढूँढती है लेकिन वहाँ पुराना घोंसला होने की वजह से वो चली जाती है। इसलिए मैंने वो पुराना घोंसला तोड़ दिया। सोचती हूँ कि क्या वह वही बच्चा है या कोई और, जो अब फिर से घोंसला बनाना चाहता है। अब शायद थोड़े ही दिन में मैं फिर से चिड़ियों का सफर देख पाऊँगी।

स्वराली देवास, म.प्र. में दसवीं में पढ़ती हैं।
फोटोः स्वराली

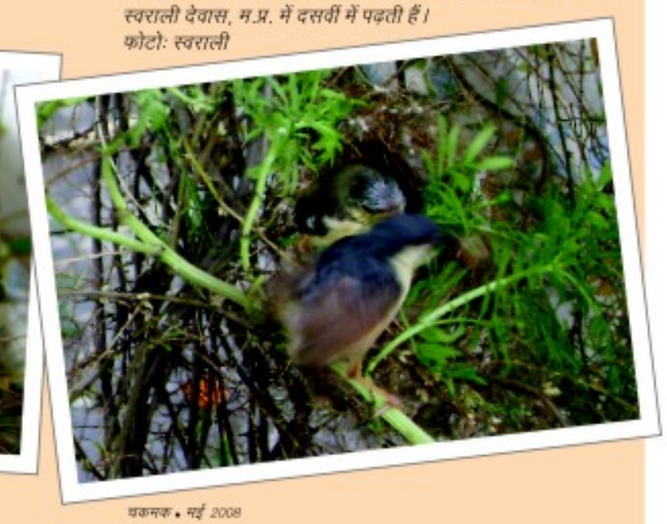

आछी लागै जीजी रे मने राबड़ी

आछी लागै जीजी रे मने राबड़ी
अच्छी लागै मका की राबड़ी
घोड़-घाड़ यानै चूल्हे पै चढ़ाया
घोड़-घाड़ यानै चूल्हे पै चढ़ाया
नीचै लगा दी लाकड़ी
अच्छी लागै मका की राबड़ी।

घोड़-घोड़ यानै थाली में सिड़ाया
घोड़-घोड़ यानै थाली में सिड़ाया
ऊपर जमगी पापड़ी
अच्छी लागै मका की राबड़ी।
अच्छी लागै जीजी तेरी राबड़ी।

बूढ़ा नै घणी भावै है राबड़ी
ओ वा का दाढ़ हिलै नहीं जाबड़ी
अच्छी लागै मका की राबड़ी।
अच्छी लागै मका की राबड़ी।
अच्छी लागै जीजी तेरी राबड़ी।

यह लोकगीत सरिस्का अभयारण्य के आसपास के गाँवों से लिया है।

संकलनः कप्तान सिंह सोलंकी, सम्पादनः प्रभात